भविष्यवक्ता छिपकली

गोगोई असम का रहने वाला बालक था। वह एक अच्छा लड़का था, परंतु उसकी एक ख़राब आदत थी की वह बहुत आलसी था और हर काम को करने का सरल उपाय ढूँढ़ता था।

उसके माता-पिता भी उसकी इस आदत से बहुत परेशान थे। एक दिन जब व अपनी दसवी की पढ़ाई कर रहा था, (पढ़ाई क्या कर रहा था? ख़याली पुलाव पका रहा था!) ज़ोर से बोला,"क्या इस बार मुझे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे?" तभी घर के दुसरे कोने से एक छिपकली-"चिक-चिक-चिक" बोल पड़ी।

गोगोई ने आश्चर्यचकित होकर पुकारने वाले को ढूँढा, तभी उसका पड़ोसी जाल सिंग अंदर आया और बोला-"गोगोई क्या तुमने कुछ माँगा या बोला क्या?"

"क्यों सिंह चाचा आपको कैसे पता चला की मैं अपने आप में चिंतन कर रहा था?" "मैंने छिपकली कि चिक-चिक-चिक जो सुनी!"इस बात पर गोगोई उत्तेजित हो उठा और बोला-"क्यों चाचा, क्या छिपकली के बोलने से कुछ होता है?"

"छिपकली के बोलने पर हर बोली/सोची/कही हुई बात सच हो जाती है!" "मगर मैं तो अच्छे अंक लाने की बात सोच रहा था" "हाँ तो फिर चिंता करने की ज़रुरत नहीं है! बिलकुल ऐसा ही होगा! परीक्षा में सबसे अच्छे अंक तुम्हारे ही होंगे!" यह सुनकर गोगोई ख़ुशी से नाच उठा -

"अगर परीक्षा में सबसे अच्छे अंक मेरे ही होने वाले हैं, तो इस परिश्रम की क्या ज़रुरत?" बिना पढ़े, निश्चिंत होकर गोगोई ने अपने सारे इम्तिहान दिए।

कुछ महीनों बाद जब नतीजे आए, तो गोगोई को काफी धक्का लगा। वह हर परीक्षा लेखापत्र में नाकाम हो गया था। वह बिलकुल हताश हो गया।

उसकी बेवकूफी पर, गोगोई के माता-पिता अप्रसन्न नहीं हुए बल्कि, उसको क्रियात्मक भाषा में समझाया-"गोगोई, हर काम के लिए सरल उपाय ढूँढ़ना तो गलत है ही, मगर अफ़वाहों और गलत धारणा के आधार पर खुद क्रियात्मक प्रकार से न सोच पाना और भी खतरनाक है। छिपकली और अन्य जीव-जंतु भगवान की देन ज़रुर हैं, मगर उन्हें साक्षात् भविष्यवक्ता मानना एक कल्पित कथा है और कुछ नहीं।"

गोगोई को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने सरल उपाय एवं अफ़वाहों का सहारा न लेकर अपनी मेहनत से सफलता प्राप्त करने का निश्चय लिया।

<u>उपदेश</u>: हमारी नैसर्गिक परंपरा एक महत्वपूर्ण देन है। हमें इस देन की इज़्ज़त करनी चाहिए, न की सुविधा अनुसार इस परंपरा पर अफ़वाहों और फरेब की चादर डालनी चाहिए।

LAST WILDERNESS foundation

इच्छाधारी नाग

राजू बिजलीपुर नामक गाँव का रहने वाला था। वह अपनी पढ़ाई के साथ-साथ पास वाले भोजनालय में काम करता था, जिसके द्वारा घर की आमदनी चलती थी। उसके माता-पिता के गुज़रने के बाद वह अपने बड़े भाई के साथ रहता था जो उसका बहुत ख्याल रखता था, मगर उसकी एक बुरी आदत थी की वह घर का सारा पैसा जुए में उड़ा देता था।

इस आदत के बदौलत, घर में एक बोरी अनाज और चंद रुपयों के अलावा कुछ भी नहीं बचा । दोनों भाई परेशान हो उठे। तभी उनका दोस्त हरी अंदर आया और बोला के गाँव में एक बाबा आए हैं जो अपने इच्छाधारी नाग की बदौलत लोगों की परेशानी दूर कर सकते हैं।

बाबा के पास पहूंचने पर बाबा ने उन्हें एक साँप दिखाया, जिसको उन्होंने इच्छाधारी बताया,“जो मांगो वो मिलेगा, लेकिन पहले १००० रुपयों के साथ तीन सर्प पकड़ कर लाओ”। राजू के घर के आस-पास बहुत से धामन सर्प मौजूद थे, उसने एक क्षण न गवाकर, सर्पों को बाबा के चरणों में रख दिया।

बाबा प्रसन्न हुए और दोनों को एक सफेद पत्थर देकर बोले-“यह नाग मणि है, अभी सर्प के माथे से प्रकट हुई है, इसे घर में रखो और कुछ ही दिनों में तुम्हारा घर धन से भर जाएगा”।

दोनों भाई इस बात से खुश होकर सो गए और रातों-रात अमीर होने का सपना देखने लगे। अगले दिन जब उनकी आँख खुली, तो उन्होंने देखा की उनके घर में रखी हुई एक मात्र अनाज की बोरी चुहों के बदौलत नष्ट हो गई है, और अब खाने को कुछ नहीं बचा है।

“अगर साँप होते, तो हम इस आपदा में कभी न पड़ते!” अपनी भूल का एहसास होते ही लड़के बाबा को ढूंढने निकले लेकिन उन्हें न तो ढोंगी बाबा मिले और न उनका “इच्छाधारी नाग”।

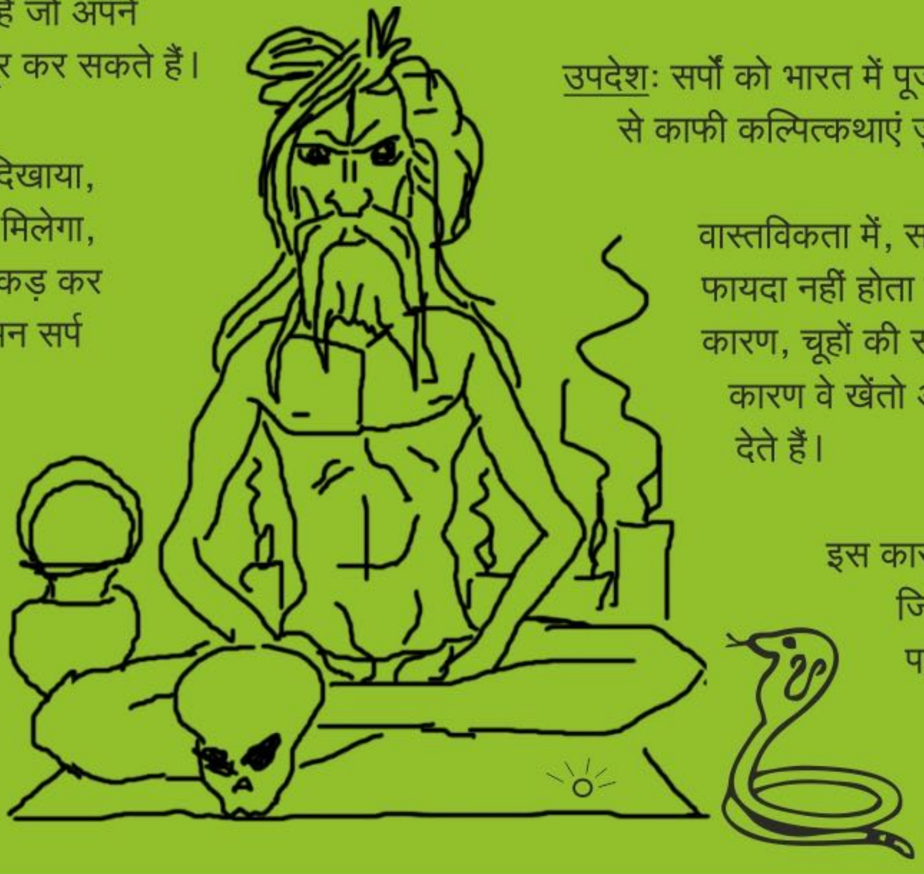

उपदेश: सर्पों को भारत में पूजा जाता है, जिसके कारण इस सरीसर्प से काफी कल्पित्कथाएं जुड़ी हैं।

वास्तविकता में, सर्प को पकड़ने या मारने से हमें कोई फायदा नहीं होता है, बल्कि सर्पों की संख्या में गिरावट के कारण, चूहों की संख्या में बढ़ोतरी हो जाती है, जिसके कारण वे खेंतो और घरों में घुसकर फसल को नष्ट कर देते हैं।

इस कारण खाद्य श्रंखला भी बिगड़ जाती है जिस्से हमारे नैसर्गिक परंपरा को नुकसान पहुँचता है।

LAST WILDERNESS foundation

जादुई उल्लू

राधापुर के पुराने आम के पेड़ के नीचे दो दोस्तों में बात चल रही थी। एक दोस्त रामू बोला-"इस बार मैं दीपावली अपने परिवार के साथ खूब धूम-धाम से मनाऊंगा क्यूँकी, इस साल तो मुझे भरपूर फसल हासिल होगी"।

इस बात पर दूसरा दोस्त राकेश बोल पड़ा-"क्यों भाई ? इस साल तुम अपने खेत में हीरे-मोती जोत रहे हो क्या ?" रामू बोला, "मुर्ख!, याद है अभी पिछले सप्ताह ही हमारे गाँव में जिस तांत्रिक बाबा ने वास लिया है ? उन्होंने मुझे बताया की अगर दशहरा और दिवाली के बीच में मैं उल्लुओं की कुरबानी देता हूँ , तो मेरा घर धन और खुशियों से भर जाएगा। मगर इस वरदान को प्राप्त करने के लिए मुझे उल्लुओं के शरीर के साथ-साथ बाबा को हर मारे गए उल्लु के ५० रुपए देने पड़ेंगे। मगर इस दरिद्र परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए यह काफी छोटी रकम है।" रामू की बात सुनकर, राकेश भी इस अपराध में शामिल हो गया और दोनों दोस्तों ने तकरीबन १०० उल्लु मार दिए।

दीपावली के एक महीने पहले दोनों बाबा के पास पहुँचे। उल्लुऔं के मृतशरीर देखकर बाबा बोले-"बहुत अच्छा! इस बली का फल तुम दोनों को दीपावली से पहले ही मिलेगा, अब जाओ और लक्ष्मी जी के आने का इंतज़ार करो"। बाबा की बातों से सन्तुष्ट होकर दोनों खेती-बाड़ी में जुट गए (दोनों ने लगाई सरसौं और गेहूँ) और बेफ़िक्र होकर मन के लड्डू खाने लगे। (लगभग दोनों ने ही खेतों का मुआइना करना बंद कर दिया) कुछ सप्ताह बाद, दीपावली के दो दिन पहले जब दोनों अपने-अपने खेतों में 'भरपूर फसल' वसूल करने गए, तो उन्होनें देखा की न तो सरसौं और न ही गेहूँ की एक भी डाली चूहों और गोह के बदौलत बची थी। दोनों की हाहाकार सुन कर, स्कूल के अध्यापक आए और परेशानी का कारण पूछा। बात को समझने के बाद बोले-"क्या कभी ऐसा हो सकता है की भगवान के भनाए गए जीव-जन्तुओं को मारने से हमें खुशियाँ और धन दौलत प्राप्त होगी ? और उल्लु को तो हम देवी का प्रतीक मानते हैं !"

दोनों दोस्तों को अपनी गलती का एहसास हुआ, वे काफी शरमिंदा हुए और उन्होंने व्यर्थ किस्सों पर ध्यान न देकर मेहनत से सफलता पाने का फैसला कर लिया।

<u>उपदेश</u>: हमारे देश में उल्लु को देवी लक्ष्मी का वाहन माना जाता है, मगर देवी का प्रतीक होने के साथ-साथ, उल्लु हमारे खाद्य श्रृंखला का बहुत ज़रुरी हिस्सा है।

उल्लुओं के होने से कीड़े-मकोड़े, चूहे और अन्य विनाशकारी कीटों की संख्या संयम में रहती है। अगर उल्लु न हो तो इन विनाशकारी कीटों की संख्या बहुत ज़यादा बढ़ जाएगी और हमें, कृषी वर्ग में हुए इस नुकसान से दाने-दाने को तरसना पड़ेगा।

LAST WILDERNESS *foundation*

दास्तान मूछों की

तिमारपुर का राजा एक अच्छा आदमी था, मगर उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी थी की वह काल्पनिक बातों को आसानी से मान लेता था। एक दिन भोजन करते समय अचानक कराह उठा। अपने सेवक को बुलाकर बोला, "ऐसा लगता है की जैसे मेरे दांत में कोई सूई चुबा रहा है।" सेवक बोला-"महाराज लगता है आपका दांत सड़ गया है जिसके कारण दर्द उठा है। मैं जाकर वैद से बात करता हूँ।" तभी राजा का मंत्री पीछे से बोल पड़ा- "महाराज पुराने नुस्के छोड़िए! दवा करने के नए तरीकों को अपनाइए। आज सुबह ही आपके दरबार में चीन से एक ओझा आया है, जो दावा करता है की उसके पास हर रोग का हल है।"

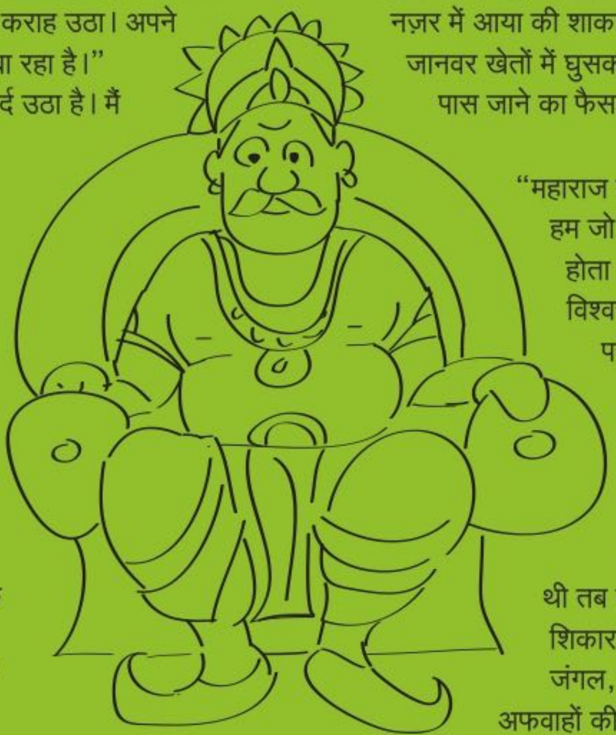

"हाज़िर करो इस निपुण व्यक्ति को।" परदेशी को अंदर बुलाया गया- "सुना है तुम चीन से आए हो और तुम्हारे पास हर रोग का हल है, क्या तुम्हारे पास दांत के दर्द के लिए कोई उचित उपाय है?" "बिलकुल महाराज, मेरे पास एक मिश्रण है जो आपके दर्द को बिलकुल ठीक कर देगा!" परदेशी, जिसने अपना नाम टेका बताया, ने अपनी पुतली में से एक जड़ी-बूटी का टुकड़ा उठाकर दूध में मिलाया और दो बार दूध में मिलाकर पीने को कहा। "लेकिन यह है क्या?" "कुछ नहीं महाराज, कुछ स्थानिक जड़ी-बूटी और एक विशेष उपकरण।" "क्या है यह विशेष उपकरण?" "बाघ की मूंछ" "क्या बाघ की मूछ की दवाइ?"

"हाँ महाराज, एक आधुनिक चीन जाँच के अनुसार, बाघ की मूछों एवं अन्य शारीरिक हिस्सों में गुण हैं जिसकी बदौलत मनुष्य शरीर में हुए रोगों का हल मिल सकता है।" यह सुनकर, महाराज काफी प्रसन्न हुए, और टेका के कहने के अनुसार दवाई लेने लगे। काफी वक़्त बीत गया, और दवा लेने के बावजूद, महाराज के दांत का दर्द बार -बार लौट आता।

टेका को एक बार फिर दरबार में बुलाया गया, उसने महाराज को यकीन दिलाया की उनको एक पुख़्ता मिश्रण की ज़रुरत है, और मिश्रण बनाने में उसे और बाघों की बली चढ़ानी पढ़ सकती है।

महाराज मान गए और राज्य में एक-एक कर बाघों की हत्या होने लगी। इसी दौरान, गाँव वालों की नज़र में आया की शाकाहारी पशुओं की संख्या में अचानक बढ़ोतरी हुई है, जिसके कारण यह जानवर खेतों में घुसकर फसलों को नष्ट करने लगे हैं। परेशान होकर गाँव वालों ने महाराज के पास जाने का फैसला किया।

"महाराज हमें पहले कभी कृषि वर्ग में इतना नुकसान नहीं हुआ जितना अब हो रहा है। हम जो भी फसल उगाते हैं उसे जंगली जानवर खा जाते हैं। पहले तो ऐसा नहीं होता था।" ये बात सुनकर महाराज हक्का-बक्का रह गए, अपने सबसे विश्वसनीय मंत्री को बुलवाया-"जगत प्रताप को बुलवाओ, उसके पास होगा इस परेशानी का हल!"

जगत प्रताप पूरी बात सुनकर बोले,-"महाराज, गुस्ताखी माफ़ मगर, किसी जीव-जंतु को मारकर कभी किसी रोग का हल कैसे मिल सकता है? उसके शव से हमें ख़ुशी या अच्छा स्वास्थ्य कैसे हासिल हो सकता है? रही गाँव वालों की परेशानी का हल - तो जब बाघों की संख्या ज़्यादा थी तब तक शाकाहारी पशुओं की संख्या संयम में थी, मगर बाघों के अनवरत शिकार के कारण इनकी संख्या बड़ गई है जिसके कारण यह जानवर न केवल जंगल, बल्कि खेतों को भी नष्ट कर रहें हैं! शारीरिक रोगों के लिए आपको व्यर्थ अफवाहों की नहीं, बल्कि उचित दवा की ज़रुरत है।"

महाराज को अपनी गलती का एहसास हुआ, टेका को राज्य से निकाल खड़ा किया और आदेश दिया की राज्य में निजी फ़ायदे के लिए पशुओं के अस्तित्व के साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया जाएगा।

उपदेश: बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। एक ख़ूबसूरत जानवर होने के साथ-साथ यह खादय श्रृंखला के शिखर पर है, जिसकी बदौलत खादय श्रृंखला में संयम रहता है, अगर ये पशु (जिसे दुर्गा माँ के वाहन के रुप में पूजा जाता है) समाप्त हो जाएंगे, तो हमारे अस्तित्व का बचे रहना मुश्किल है। क्योंकि अगर बाघ है, तो वन है, वन है तो वर्षा है और वर्षा का पानी जो हमारी सैकड़ो नदियों में जाकर उपस्थित होता है, हमें शहरों में पानी के रुप में मिलता है। अगर हम अपनी निजी ज़रुरतों के लिए इसका लगातार शिकार करते रहेंगे तो नुकसान हमें ही होगा। हमारा अस्तित्व स्पष्ट रुप से बाघों से जुड़ा है, उनके बिना हम एक बेहतरीन ज़िंदगी की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।

LAST WILDERNESS foundation